' सिंहासन खाली है ' नाटक में आज की राजनीति पर व्यंग्य

डॉ. बालाजी काशीनाथ जोकरे
हिंदी विभागाध्यक्ष
वसंतराव नाईक महाविद्यालय , औरंगाबाद

साहित्य और राजनीति के कार्य यद्यपि भिन्न होते हैं फिर भी उनकी भुमिका एक समान लक्ष्य की दिशा में समाज को प्रेरित करनेवाली होती है I दोनों का लक्ष्य समाज को स्वस्थ , विसंगति विहीन बनाना है I मानव कल्याण के उद्देश्य हेतु दोनों को अलग नहीं किया जा सकता I " राजनीति किसी भी समाज की वह धुरी होती है जिस पर किसी भी राष्ट्र का संपूर्ण जनजीवन घुमता है I राज्य संचालन की नीति राजनीति कहलाती है I राज्य को सुव्यवस्थित चलाने के लिए किन्हीं मर्यादाओं , नैतिकताओं, नियमों और समय के अनुसार व्यवस्था की आवश्यकता पड़ती है , यहीं मर्यादा , नियम आदि राजनीति के आधार पर स्तंभ होते हैं " [१] साहित्य समाज का आईना है I और राजनीति समाज का अभिन्न भाग है I साहित्यकार साहित्य में राजनीति का यथार्थ व्यंग्यात्मक चित्रण कर समाज समाज को देश की राजनीति से चेतित करता है I स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद की राजनितिक परिस्थितियों ने हिंदी नाटककारों को सर्वाधिक प्रभावित किया है I जिसमें सुशिल कुमार सिंह प्रमुख साहित्यकार हैं I

रंगमंच और दूरदर्शन का एक जाना - माना नाम है सुशिल कुमार सिंह I आधुनिक नाटकों में कथ्य और शिल्प के स्तर पर हिंदी नाटकों को प्रयोगशील प्रुवृति देने में राकेशोत्तर नाटककारों में जो नाम तेजी से उभर कर आया वह सुशिल कुमार सिंह जी का है I आपके नाटक कोरी साहित्याकता के चोले को उतारकार रंग संपृक्ति की ओर अग्रेसर हैं I आपने ' सिंहासन खाली है ' , 'नागपाश' , 'आज नहीं तो कल' , 'गुडबाई स्वामी' , 'चार यारों की यार' , 'अँधेरे के रही' , 'अलख आजादी की' , 'बेबी तुम नादान' , 'बापू की ह्त्या हजारवीं बार' , 'आचार्य रामानुज' , 'जुबली उत्सव में', 'नायक दर नायक' , 'नौखलिया' , 'दीवान' नाटक प्रमुख नाटक हैं I ' सुशिल कुमार सिंह ' के ये सभी नाटक प्रकाशित हैं I इनमें से कई नाटकों के भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुए हैं I ' सिंहासन खली है ' नाटक का पुरे भारतवर्ष में पांच हजार से अधिक बार मंचन एवं लगभग सभी प्रमुख भारतीय भाषों में अनुवाद हुआ है I ' सिंहासन खाली है ' नाटक मूलतः राजनितिक परिप्रेक्ष्य का व्यंग्यात्मक नाटक है और राजनीति की यथार्थ विसंगति को उभारनेवाला नाटक है I [२]

सत्ता और संघर्ष आज के युग में ही नहीं, आदिमकाल में भी विद्यमान थी। स्वयं रचनाकार के ही शब्दों में साम्राज्य लिप्सा, राजनैतिक कुचक्रों, झूठे वादों, कोरे आश्वासनों और सत्ता अथवा सिंहासन के प्रति मोह ने जनता को सदैव ही उत्पीड़ित किया है। मानव सभ्यता के क्रमिक विकास के क्षणों में जब पहली बार सत्ता, सिंहासन तथा राजा की स्थापना हुई होगी, शायद तभी से बहुत स्वाभाविक रूप से राजा और प्रजा के मधुर संबंधों के बीच जहर व्याप्त हो गया होगा। राजा इस विश्वास के साथ बनाया जाता है कि वह सत्ता और सिंहासन की ताकत से प्रजा का पोषण और रक्षण करेगा परंतु राजा राजगद्दी पर बैठते ही निरंकुश हो जाता है और पोषण तथा रक्षण की बात भूलकर शोषण तथा भक्षण करने लगता है। इसी प्रकार सत्ता के साथ विरोध जन्म लेता है और विरोध प्राय: संघर्ष, षड्यंत्र और हत्याओं की रचना करता है। ये परिस्थितियां हर देश तथा हर काल में होती आई है हो रही है। " सिंहासन वही है केवल रूप नाम बदल गया है। पहले कबीलों की सरदारशाही, राजाओं की राजशाही, अधिनायकों की तानाशाही थी और अब नए नेताओं की लोकशाही । शोषक और अहितकारी राजा से सुशोभित सिंहासन अब तक खाली है। उसके लिए सुपात्र चाहिए । इसी तलाश की नाटकीय यात्रा है-करो सिंहासन खाली। " [३]

चुनाव नेताओं के लिए एक मौसम है जिस पर उनका भविष्य निर्भर होता है I वे स्वार्थ सिद्धि के लिए चुनाव के समय बड़े विनयशील बनाते हैं और जनता के इर्द - गिर्द मंडराते हैं I उनके मन में जनता के प्रति कोई प्रेम ,लगाव या अपनापन नहीं होता , उन्हें तो केवल चुनाव जितने से मतलब होता है I एक बार जीत मिली तो पांच साल कोई चिंता नहीं I चुनाव में तिकड़मबाजी और धूर्ततापूर्ण चाले अपनाई जाती हैं I चुनाव लोकतंत्र की रीढ़ है किन्तु आज यह रीढ़ बहुत कमजोर हुई है I ' सिंहासन खाली है ' में स्वार्थी नेता , झूठे आश्वासन , राजनीतिक दांवपेंच , सत्ता संघर्ष , भ्रष्टाचार आदि पर तीखा व्यंग्य किया गया है I चुनाव में भाषण देने की कला नेताओं को पैदायशी प्राप्त होती है I नेता लुभावने शब्दों से जानता को अपनी ओर खींचता हैं I लंबा भाषण देते कहता है , " मैंने अपनी इलेक्शन स्पीच का एक छोटा सा टुकड़ा बतौर ट्रेलर पेश किया था ताकि आपको सुपात्र समझने में सुविधा रहे I " [४]

नाटक की महिला जब नेता से पूछती हैं सब आपके अपने आदमी हैं नेताजी या किराये के भी ? I तब नेता मुस्कुराकर धीरे से कहता है , कुछ अपने हैं कुछ किराये के और कुछ विरोधी पक्ष के लोगों को तोड़ लिया है I यह तो चुनाव है , और चुनाव में हर प्रकार के हथकंडे अपनाने की छूट तो दी ही जाती है वरना .....I " [५] छूट नहीं दी गई तो जबरदस्ती ली जाती है I सत्ता का मोह और स्वार्थ मनुष्य को पतन की ओर ले जाता है नेता को समर्थन देनेवाले भी कच्ची गोलियां खाए हुए नहीं I वे महाधूर्त होते हैं I सुनहरे मौके का लाभ उठाना भली भांति जानते हैं I जब वे समर्थन वापस लेना चाहते हैं तब नेता कहता , "आह ! लगता है किसी ने आप लोगों को मेरे खिलाफ भड़का दिया है I भईयों ! मैं विशवास दिलाता हूँ की सिंहासन पर बैठते ही सर्वोच्च पद में वितरित करूँगा I और देश की सुख – संपदा हम मिल – बाँट कर खा सकेंगें " नाटककार ने नेताओं की हीन , स्वार्थी मनोवृत्ति पर तीखा व्यंग्य किया है I मैं सब कुछ दूंगा किन्तु मुझे समर्थन दो , सिंहासन दो वही तो नेता चाहते हैं I प्रचार कार्य के लिए श्रममूल्य , सुरसुंदरी , वस्त्र , जीपें आदि सबकी सुविधा की जाती हैं I इतना ही नहीं नेता समर्थन देनेवालों तथा पिट्ठूओं के भाई भतीजों , रिश्तेदारों के लिए उद्योग – धंदे , ऊँचे ऊँचे ओहदे , नौकरियां , विभिन्न प्रकार के परमिट आदि हर प्रकार की मदद देने का वादा करते हैं I यहाँ तक की उनकी सारी मांगे पूरी करने को तैयार हो जाते हैं I वोटरों को नोटों द्वारा ख़रीदा जाता है I आज भी जनता मात्र शतरंज के मोहरे बन जाती हैं I

नाटक में सत्ता प्राप्त करने के उतावलेपन पर तीखी चोट की है I हर कोइ जल्दी से जल्दी सिंहासन प्राप्त करना चाहता है I नेता कहता हैं , " मैं इसे लेकर ही रहूँगा I मैंने इसके लिए अपनी नैतिकता को कुर्बान किया है I सच्चाई का गला घोंटा है I मैं इसे लेकर ही रहूँगा I मेरे रस्ते से हट जाओं " [६] नाटककार ने चित्रित किया है, आदिम युग से आज तक सत्ता और सिंहासन के लिए जो संघर्ष , शक्ति , और षड्यंत्र , समाज और शोषण साम्राज्य और सीमाएं तथा धर्म और धर्मद्ता वैसी ही है I

'सिंहासन खाली है ' नाटक मुलत; राजनितिक परिप्रेक्ष का व्यंग्यात्मक नाटक है I और राज्निति कि यथार्थ स्थिति को नाटक चित्रित करता है और राजनीति की यथार्थ विसंगति को उभारनेवाला भी है I देशसेवा की दुदंभि देकर राजनेता बरसों तक सत्ता का रस चखना चाहते हैं I इनकी सत्ता की हवस कभी पूरी होती ही नहीं होती I ' सिंहासन खाली है ' नाटक के आरंभ में सुत्रधार कहता है , आइए , आइए, सिंहासन पर बैठिए I यह आपको सर्व शक्तिमान , सत्ता संपन्न बनाएगा ..... और आप इस पर बैठकर सत्य अहिंसा और न्याय की मनचाही कर सकेंगे I

राजनीति में नारों की सार्थकता निर्विवाद है I आधुनिक राजनीति में लोकतंत्र केवल नारों तक सीमित रह गया है I राजनीति ने कसम खाई है की वह कभी इन वादों को पूरा नहीं करेगी I नारों और आश्वासनों के नाम पर जनता को धोखा देना , मुर्ख बनाना , कुर्सी सलामत रखने के लिए तस्करों , व्यापारियों , अभिनेताओं , अभिनेत्रियों को बढ़ावा देना आदि कार्य करने में राजनीतिज्ञ बड़े धूर्त चालक और कुशल होते हैं I नारों का पुल बंधना तो नेता ही जाने I नाटक में सूत्रधार कहता हैं " और ..... नारों के पुल ढह गए ..... बड़े - बड़े बांध बह गए , लेकिन आश्वासनों की सीमेंट और शब्दजाल के स्तंभों पर टिका यह महान पुल अपने संपूर्ण वैभव के साथ तूफानों के बिच खड़ा रहकर आज भी मुस्करा रहा है I " [७] आज जनता के लिए राजनेताओं के वादें , विश्वास , आश्वासन निरर्थक , बेजान , बेमानी और मुर्दा हो गए हैं I चुनाव जितने के लिए राजनेता जनता से अनेकानेक , वादे करते हैं ताकि जनता उन्हें वोट दे और वे जीत सके I

नाटक में नेता कहता हैं , " ..... मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आपकी उन्नति और तरक्की के लिए ..... टैक्स अथवा करों का नामोनिशान मिटा दूँगा I विदेश से भरी सहायता प्राप्त करूँगा I .... धरती पर स्वर्ग उतर दूँगा ..... देश की तमाम समस्याएं पल झपकते सुलझा दूँगा ..... " [८] हर व्यक्ति जानता है यह वादे झूटे हैं I अगर देश से टैक्स ही बंद होगा तो देश निर्माण की योजनाएं कैसे कार्य करेगी I किन्तु नेता जनता हैं भोली — भाली जनता को लुभावने वादे बड़े अछे लगते हैं I पलक झपकते ही तमाम समस्याओं को मिटाने वाला नेता सिंहासन मिलते ही जनता में लिए अदृश्य बनता है I पांच साल नेता के दर्शन दुर्लभ ही हो जाते हैं I सत्ता मिलते ही नेता केवल सम्मान और कीर्ति के लिए उद्घाटनों , शिलान्यासों दौरें आदि में अपना कार्यकाल व्यतीत करते हैं I देश को कर्ज मुक्त करने वाला नेता विदेशों से ऋण लेकर उलटा देश को आकंठ कर्ज में दूबों देता हैं I

लोग नहीं समझ पा रहे की वे कहाँ जाये , क्या करे , किसे अपना नेता चुने I नाटक का व्यंग्य इन्हीं प्रश्नों के साथ गहरा होता चला जाता है I आधुनिक नेता मुखौटेधारी होते हैं I उन्हें पहचानना बड़ा दुष्कर होता है I आम आदमी शोषण की चक्की में पिसता चला जाता हैं I नाटक में नेता प्रजाहित दक्ष अपने खाली राजकोष को प्रजा की अर्पित संपति और संचित संपति के एक भाग से भरने का हुक्म देता है I केवल हुक्म ही नहीं देता बल्कि सख्ती से वसूली का आदेश भी देता है I ऐसे पाखंडी नेता आज हर डाली - डाली पर बीते हैं I प्रजा जिसे भी जीताती है वह बाद में ऐसा ही दुराचरण करता हैं I

आज के नेता किसी भी दल से , विचारों से एकनिष्ठ नहीं हैं I वे सत्ता की हवा का रुख जिस ओर रहता है उस ओर भागते चले जाते हैं I स्वतंत्रता से पहले लोगों ने देश कल्याण, आझादी तथा लोगों के हित के लिए आदर्शपूर्ण तत्वों पर पक्ष की निर्मिति की थी और देशसेवा , आदर्शों से वे एकनिष्ठ थे I किन्तु आजादी के बाद पुरा वातावरण ही बदल गया I आज नेता सत्ता के लिए जीते हैं नाकि पक्ष , पार्टी , आदर्श , तत्व आदि I ' सिंहासन खाली है ' नाटक का पात्र एक , दो , तीन दलबदल कर नेता का समर्थन देते हैं I वर्तमान समय में यह दलबदल की पृवृत्ति बड़ी तेज गति से राजनीति में चल रही है I

नेता और उसके चमचे सिंहासन के लिए आपस में कुत्ते बिल्ली की तरह लड़ने लगते हैं और यही लडाई आगे चलकर राजनितिक हत्याएं और षड्यंत्र का रूप ले लेती है I नाटक में इसका चित्रण हुआ है —

एक - हम सिंहासन चाहते हैं
दो - नहीं मिलेगा तो शक्ति का भी प्रयोग करेंगे
तीन - हमारी आस्था असत्य में हैं
एक - हिंसा पर हमें विश्वास है
दो - अन्याय पर हमें गर्व हैं
तीन - हम सिंहसा चाहते हैं " [९]

सत्ता की शिकार हमेशा स्त्री ही होती है I प्राय: शासकवर्ग सत्तालोलुप होने के साथ वासनांध भी होते हैं I आज हम समाचार पत्र में पढ़ते हैं कि अमुक राजनेता ने स्त्री का शोषण किया है I वास्तविक वे जानता की सेवा के लिए होते हैं किन्तु सत्ता की नशा स्त्री का शोषण करके ही उतरती हुई हमें दिखाई देती है I नाटक में एन पंक्तियों के मध्यम से दर्शाया गया है I

नेता - औरत तुम कहाँ जा रही हो I
महिला - आपका अनुगृह प्राप्त करने महाराज I
नेता - औरत तुम कहीं नहीं जाओगी , मेरे पास रहोगी I
महिला - (तनिक भयभीत होकर) क्यों ?
नेता - इसलिए की तुम मुझे पसंद हो I मैं तुम पर विशेष आग्रह करूँगा [१०]

राजनीति समाज में व्यापक परिवर्तन का मंच है I इसका उद्देश्य समाज और लोक का कल्याण करना है । किन्तु देश की राजनीति विकृत अवस्था के चरम पर पहुँच गई है I राजनीति सत्ता की हवस , बलप्रयोग , पैसा , अनैतिकता , शोषण का अड्डा बन गई है I यह सब देख देश का अच्छा नागरिक राजनीति के नाम से भी भागता है . किन्तु साहित्यकार अपनी आँखे मूंदकर जी नहीं सकता I क्योंकि राजनीति जब अनैतिकता का रास्ता अख्तियार लेती है तब सबसे पहला विरोध साहित्य ही करता है I प्रेमचंद ने प्रगतिशील लेखक संघ , लखनऊ में दिए गए अपने प्रसिद्ध भाषण में कहा , " साहित्यकार का लक्ष्य महफ़िल सजाना और मनोरंजन का सामान जुटाना नहीं है — उसका दरजा इतना मत गिराईए I वह देश भक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई नहीं , बल्कि उसके आगे मशाल दिखाती हुई सचाई है " [११] 'सिंहासन खाली है' नाटक में

सुशिल कुमार सिंह ने राजनीति पर व्यंग्य कसा है वह देश की राजनीति पर सटीक भाष्य है I

संदर्भ -

1. डॉ. ममता,साठोत्तर हिंदी नाटक और राजनीति पृ २
2. साठोत्तरी हिंदी नाटककार , लवकुमार लवलीन , पृष्ठ १५७
3. करो सिंहासन खाली' ने किया कटाक्ष , दैनिक जागरण , १० मार्च २९०१४
4. सिंहासन खाली है , सुशिल कुमार सिंह , पृष्ठ १२
5. सिंहासन खाली है , सुशिल कुमार सिंह , पृष्ठ ४१,४२
6. सिंहासन खाली है , सुशिल कुमार सिंह , पृष्ठ ६६
7. सिंहासन खाली है , सुशिल कुमार सिंह , पृष्ठ ४९
8. सिंहासन खाली है , सुशिल कुमार सिंह , पृष्ठ ११
9. सिंहासन खाली है , सुशिल कुमार सिंह , पृ २१
10. सिंहासन खाली है , सुशिल कुमार सिंह , पृ ३७
11. चतुर्वेदी , रामस्वरूप , हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास , लोकभारती प्रकाशन , इलाहबाद , २२ वां संस्करण , २०१६ पृष्ठ ०९

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com